Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

संस्कृति एवं पुरातत्व धरोहर सामत सरना डीपाडीह के विशेष संदर्भ में

डॉ. रामरतन साहू* मनीष कुमार देवांगन**

* विभागाध्यक्ष (इतिहास) डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** अतिथि व्याख्याता (इतिहास) शासकीय कॉलेज, रामचन्द्रपुर, जिला. बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – प्राचीन काल से भारत अनेक धर्मो की जन्मभूमि तथा आश्रयदाता रही है। भारत के मध्य भाग देश के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व भाग से विभाजित होकर नया राज्य छत्तीसगढ 1 नवम्बर सन् 2000 में भारत के 26 वे राज्य के रूप में अपने अस्तित्व में आयी। राज्य का का कुल क्षेत्रफल 1,35,195 वर्ग किलोमीटर है जो भारत कुल क्षेत्रफल का 2.43 प्रतिशत है। छत्तीसगढ राज्य के उत्तर-पूर्व भाग में सरगुजा संभाग स्थित है जिला मुख्यालय अंम्बिकापुर के सामरी तहसील में यह पुरातात्विक स्थल है। जिला मुख्यालय से 38 किलोमीटर की दूरी पर अंतिम छोर पर स्थित रामानुजगंज मार्ग पर राजपुर तहसील से दायें ओर शंकरगढ-कुसमी मार्ग पर लगभग 73 किलोमीटर की दूरी पर पुरातात्विक स्थल डीपाडीह गांव स्थित है।

छत्तीसगढ के उत्तरी-पूर्वी हिस्से में सामरी तहसील जो कि सरगुजा संभाग के अंतर्गत आता है। सामरी तहसील के ही गांव डीपाडीह चारो ओर से पहाडो की श्रृखलाओ तथा वनो से घिरा हुआ है,कन्हर, गलफुल्ला तथा सूर्या नदियां यहां से होते हुए बहती है। गलफुल्ला नदी के दांयी तथा कन्हर नदी के बांयी ओर पठारी भूमि पर यह पुरातात्विक स्थल स्थित है।

शब्द कुंजी – सामत सरना, दंतकथा, टांगीनाथ, सामनी सिंह, बावडी, फरसा, श्रद्धालु, गजलक्ष्मी, गवाक्ष शैली, गर्भगृह, भग्नावशेष।

प्रस्तावना – प्राचीन भारतीय इतिहास अपने गोद मे अनेक स्मरणीय यादें रखी हुई है, जो हमारे लिए गौरव का विषय हैं। भारत के लगभग मध्य भाग में स्थित राज्य छत्तीसगढ 1 नवम्बर सन् 2000 को अपने अस्तित्व में आया। छत्तीसगढ का सबसे संभाग सरगुजा राज्य के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित है यह भाग ऊॅचे-ऊॅचे पहाडो और सघन वनो से घिरा यह क्षेत्र जनसंख्या की दृष्टि से अनुसूचित जनजाति बाहुल्य है। रिहन्द, रेंड, कन्हर आदि नदियां इस क्षेत्र में प्रवाहित होती है। सरगुजा संभाग में ही रामगढ में स्थित सीताबेंगरा तथा जोगीमार की गुफाएं स्थित है इसके अतिरिक्त अनेक पुरातात्विक स्थल जैसे महेशपुर, कचला-भदवाही, महारानीपुर डीपाडीह आदि स्थल मौजूद है। ये सभी स्थल पुरातात्विक स्थल सघन जंगलो और दूरस्थ क्षेत्रो में होने के कारण परिवहन की सुविधा के अभाव में आज भी लोगो के लिए अनभिज्ञ है।

सर अलेक्जेंडर कनिंघम के आर्किलाजिकल सर्वे आफ इंडिया रिपोर्ट से यहां के मंदिरो के अवशेषो के बारे में पहली बार जानकारी मिलती है। इसके बाद समर बहादुरसिंह ने सरगुजा का ऐतिहासिक पृष्ठ में तथा अंग्रेजी में प्रकाशित हिस्ट्री ऑफ सरगुजा स्टेट से इस स्थल की जानकारी प्राप्त होती है। स्थानीय स्तर पर प्रकाशित समाचार पत्रो से भी इस क्षेत्र के विषय में जानकारी प्रकाशित की जाती थी। प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग (सागर विश्वविद्यालय) के प्रोफेसर डॉ. झा द्वारा प्रकाशित शोध लेखो के माध्यम से इस पुरातत्व स्थल की जानकारी प्राप्त होती है। बिलासपुर में पदस्थ रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के द्वारा भी इस स्थल का सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन तैयार किया। बाद में फिर से तत्कालीन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी श्री रायकवार तथा बिलासपुर संग्रहाध्यक्ष श्री राहुल कुमार के द्वारा सन् 1987-1988 में इस पुरातत्व स्थल को संरक्षण प्रदान करने के साथ यहां प्राप्त टीलो के मलबे की सफाई करने की आवश्यकता के साथ संभावनाओं को व्यक्त करते हुए शासन का ध्यान इस पुरातात्विक स्थल की ओर खींचा। डॉ. हेमू यदु द्वारा लिखित पुस्तक छत्तीसगढ का पुरातात्विक वैभव में डीपाडीह के प्रमुख मंदिर के अवशेषो के बारे में डीपाडीह के कला अवशेष, प्रतिमाओ की सूची, के बारे में जानकारी दी गयी है।

पुरातात्विक स्थल डीपाडीह के सामत सरना मंदिर के विषय में दंतकथायें प्रचलित है, जन अनुश्रुति के अनुसार सामत सरना एवं पडोसी राज्य झारखण्ड में स्थित टांगीनाथ के बीच युद्ध की कहानी जुडी है। जनश्रुति के अनुसार झारखण्ड के टांगीनाथ तथा डीपाडीह के सामत राजा (सामनी सिंह) के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था जिसके परिणामस्वरूप सामत राजा युद्ध भूमि में वीरगति को प्राप्त हो गये थे जिसके बाद राजा की सभी रानियॉ परिसर में निर्मित प्राचीन बावडी में कूदकर अपने प्राणो की आहुति दी थी।

झारखण्ड राज्य के गुमला जिले से 50 किलोमीटर की दूरी पर एवं डुमरी विधानसभा से 8 किलोमीटर की दूरी पर यह स्थल है टांगीनाथ धाम इस स्थल पर भगवान शिव के मंदिर के अवशेष प्राप्त है यह स्थल भगवान शिव को समर्पित है, स्थानीय लोगो की यह मान्यता है कि यहां भगवान परसुराम का फरसा जंगरोधी लोहे से निर्मित जमीन के भीतर गडा हैं। प्रतिवर्ष सावन माह में मेंला (श्रावणी मेंला) का आयोजन किया जाता है जिसमें श्रद्धालु आस्था और विश्वास के साथ आते है।

डीपाडीह में किसी एक धर्म विशेष या सम्प्रदाय की मूर्तियां और मंदिर नहीं मिले है वरन् यहां शैव, शाक्त, वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित अवशेष प्राप्त

हुए है। यहां पर निर्माण किए गये सभी मंदिरो की मुख्य विशेषता यह है कि मंदिर ऊंची जगती पर निर्मित है यहां से प्राप्त कोई भी मंदिर अपनी पूर्णता में नहीं है जिससे मंदिर के विषय में हमें जानकारी प्राप्त करना कठिन है।

पुरातात्विक स्थल डीपाडीह के समस्त मंदिर अवशेषो को हम सुविधा के लिए चार भागो में बांट सकते है:

1. सामत सरना मंदिर समूह
2. उरांव टोला मंदिर समूह
3. सूर्य मंदिर समूह
4. रानी पोखर समूह

सामत सरना मंदिर समूह – सामत सरना मंदिर समूह डीपाडीह गांव का सबसे विशाल मंदिरो का समूह है। इस स्थल पर प्राचीन शिव (पशुधारी) की बलुआ पत्थर से निर्मित प्रतिमा है जिसे गांववासी सामत राजा मानकार इसकी पूजा करते थे, जिससे इस स्थल का नाम सामत सरना पड गया।

यह समूह छत्तीसगढ का में एक ही परिसर में निर्माण हुए मंदिरो की संख्या के आधार पर अधिक संख्या वाला मंदिर समूह है। यहां प्राप्त शिवमंदिर आकार में छोटे है और अधिक संख्या में है।

इस मंदिर समूह में कुल मिलाकर 9 मंदिर अवशेष और एक बावडी शामिल है जो निम्न है–

1. मुख्य शिव मंदिर
2. लघु मंदिर अवशेष (सामने, उत्तर एवं दक्षिण की ओर)
3. चामुण्डा मंदिर
4. पूर्व मूखी शिवमंदिर (चामुंडा मंदिर के सामने दांयी ओर)
5. संयुक्त शिव मंदिर
6. अष्टकोणीय और प्राचीन मंदिर के अवशेष
7. बावडी

मुख्य शिव मंदिर सामत सरना – मुख्य शिव मंदिर एक आयातकार मंदिर है जो पूर्व दिशा की ओर है यह मंदिर पत्थर से बने जगती (आधार) पर निर्मित है। मंदिर को मण्डप, अंतराल, गर्भगृह और नंदी मंडप में विभक्त किया गया है। शिव मंदिर सामत सरना का गर्भगृह (जहां भगवान विराजित है) का आकार आयताकार हैं जो उत्तर से दक्षिण की चौडा और पूर्व से पश्चिम की ओर लम्बा है गर्भगृह के चारो ओर परिक्रमा पथ है जो खुला हुआ है गर्भगृह मे छोटे–छोटे छज्जे निर्मित है जिन पर पूजन सामग्री रखी जाती थी।

मण्डप – मंदिर का मण्डप उत्तर–दक्षिण की ओर चौडा और पूर्व–पश्चिम की ओर लम्बा आयताकार मण्डप है। मण्डप में प्रवेश करने के लिए केवल एक प्रवेश द्वार बना है जो पूर्व दिशा की ओर निर्मित है। मण्डप की दांयी और बांयी ओर की दीवारो पर विशाल प्रतिमाये दोनो ओर स्थापित है दांयी ओर की दीवारो पर पार्वती, गणेश, वराह, भैरव की प्रतिमाये तथा बांयी ओर विष्णु, कार्तिकेय, ब्रम्हा, महिसासुरमर्दिनी की प्रतिमाये निर्मित है।

अंतराल – मंडप और गर्भगृह में प्रवेश के मध्य अंतराल निर्मित होता है यह अंतराल आयताकार है जो लगभग 8.50 फीट लम्बा और 4.74 फीट चौडा है।

गर्भगृह – गर्भगृह में प्रवेश हेतु मण्डप से लगा द्वार निर्मित है प्रवेश द्वार की निचली चौखट अपने अपने वास्विक स्थान पर ही है। बांयी ओर की द्वार शाखा के नीचे नदी देवी की प्रतिमा (यमुना) है जो कछुये के उपर सवार खडी है जिनके दोनो हाथो में घडे लिए प्रदर्शित है। यमुना के दक्षिण तरफ के हिस्से उपासक है जो मुद्रा स्थिति में बैठा है, यमुना के बांयी ओर छत्रधारी पुरूष खडे है और बौना पुरूष उल्टी दिशा में मुख किये खडा है। दांयी द्वार शाखा पर देवी गंगा का चित्र अंकित है जो अपने दोनो हाथो में घडे पकडे है, देवी गंगा के बालो का जूडा और बालो को संवारने का तरीका विशेष प्रकार का है। मुख्य मंदिर में दो टुकडो मे खंडित सिरदल की प्रतिमा प्राप्त हुई जिसे बाद में जोडा गया सिरदल के ललाट विम्ब मे कमल आसन की मुद्रा में बैठी गजलक्ष्मी है जिनकी दो भुजाये है और दोनो हाथो में ब्रम्ह कमल का पुष्प अंकित है। गजलक्ष्मी के दोनो तरफ कमल पर खडे गज मानो ऐसा प्रतीत हो रहे है कि वे गजलक्ष्मी का अभिषेक कर रहे हो। प्रमुख शिव मंदिर के सामने पेड के नीचे चबूतरे पर पाषाण से बना नंदी की विशाल मूर्ति बैठी हुई स्थिति में है यह मूर्ति का मुख पश्चिम दिशा की ओर हैं जो गर्भगृह के शिवलिंग को देख रही है नंदी की यह मूर्ति छत्तीसगढ की सबसे बडी मूर्ति है।

पुरातात्विक स्थल डीपाडीह से पाषाण से निर्मित विभिन्न मंदिरो के भग्नावशेष प्राप्त हुए है और अनेक देवी–देवताओ की प्राचीन मूर्तियां सामने आयी है ये सभी मूर्तियां 8–9वी सदी से लेकर 12 सदी तक की मानी जाती हैं सामत सरना मंदिर में विभिन्न देवी देवताओ की प्रतिमाये विद्यमान है।

1. नवग्रह
2. गौरी
3. भैरव
4. नृत्य करती गणेश की प्रतिमा
5. कार्तिकेय
6. गणेश
7. विष्णु
8. महिषासुर मर्दिनी
9. ब्रम्हा

सामत सरना मुख्य मंदिर में सामत राजा की पशुधर शिव की प्रतिमा स्थापित है जिसे ग्रामवासी सामत राजा के नाम से पुजते है यह प्रतिमा चार भुजाओ वाली है यह प्रतिमा खंडित अवस्था में है यह लगभग 8–9वी सदी की निर्मित प्रतिमा है। प्रतिमा के निचले दाये हाथ में परशु धारण किये है और से खंडित है ऊपरी दाये हाथ की एक उंगली मुडी है नीचे से बांये हाथ भुजा से अलग से है और ऊपरी बांये हाथ त्रिशुल धारण किये हुए है।

सामत सरना मंदिर में भैरव की मूर्ति भी है जो अत्यन्त जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है भैरव की यह प्रतिमा चार भुजाओ वाली है जिसमें समस्त भुजाएं टूटी हुई है भैरव की मूर्ति की गला भी खंडित है, भैरव की प्रतिमा नृत्य करती हुई मुद्रा में है गले में सांपो और मुण्ड की माला धारण है।

द्वारपाल की चार भुजाओ वाली प्रतिमा जिसे शैव द्वारपाल माना गया है खंडित अवस्था में है हाथो में त्रिशुल, कटार धारण किये है। सामत सरना मंदिर में भगवान कार्तिकेय की मूर्ति रखी गयी है इस मूर्ति में कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर विराजमान है मयूर की मूर्ति टूटी हुई अवस्था में है। चामुण्डा की आठ भुजाओ वाली प्रतिमा जिसका गला खंडित है यह प्रतिमा जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है चामुण्डा के बांये पैर के नीचे पिशाच और दांयी पैर के नीचे श्वान का प्रतिमा है जिसमे श्वान के पीठ के ऊपर खोपडी रखी है। संयुक्त शिव मंदिर मुख्य शिव मंदिर के उत्तरी दिशा में है जहां एक बडा शिवलिंग और संयुक्त मंडप स्थापित है। इस मंदिर का मुख पूर्व दिशा की ओर है जहां 3 मंदिर एक ही जगती पर है।

पंचायतन मंदिर प्रमुख शिव मंदिर के कोने में उत्तर–पश्चिम दिशा में है इसे चामुण्डा मंदिर भी कहा जाता है इस मंदिर का निर्माण पंचायतन शैली में किया गया है जिसके कारण इसे पंचायतन मंदिर भी कहते है इस मंदिर का मुख उत्तर दिशा की ओर है इस मंदिर गर्भगृह आयताकार है चामुण्डा मंदिर के प्रवेश द्वार के सम्मुख कुछ दूरी पर चार कोनो में एक–एक अष्टकोणीय

पाषाण स्तंभ स्थापित किये गये है। चामुण्डा की मूर्ति मंदिर के गर्भगृह में स्थापित एक मुख्य प्रतिमा है यह प्रतिमा खंडित अवस्था में तथा काफी जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है इस मंदिर का निर्माण पंचायतन शैली में किया गया है जिसके कारण मंदिर के चारों कोनो पर लघु मंदिर का निर्माण किया गया है चामुण्डा मंदिर के मण्डप के बाहर तीन ओर लगभग छ: फीट चौडा पाषाण चबूतरा निर्मित है लघु मंदिर पेड उगने के कारण नष्ट हो गये है केवल मंदिर का आधा भाग ही हम देख सकते है चामुण्डा मंदिर के बाहर की तरफ दक्षिणी दिशा की ओर संभवत: एक मंदिर रहा होगा जिसका चबूतरा शेष है। पंचायतन मंदिर और शिवमंदिर से गणेश, माहेश्वरी, ब्रह्माणी, वैष्णवी, वीणा धारण किये शिव, भैरव और विष्णु की मूर्तियां प्राप्त है। सामत सरना मंदिर समूह के पूर्व दिशा में सेमल छीला स्थित प्राचीन मंदिर के अवशेष और अष्टकोणीय मंदिर है सेमर टीला मंदिर पंचायतन शिव मंदिर के दक्षिण भाग में है।

सेमर टीला मंदिर के गर्भगृह में सेमल का विशाल पेड उग जाने के कारण यह मंदिर लगभग नष्ट हो चुका है इस मंदिर के तीन अंग मंण्डप, अंतराल और गर्भगृह थे इस मंदिर से प्राप्त कुछ प्रतिमाये शैव द्वारपाल, वीरभद्र, नंदी, सिंह है जो खंडित अवस्था में है। सेमल टीले के दक्षिण दिशा में लगभग 50 मीटर की दूरी पर अष्टकोणीय मंदिर है जो पाषाण से बने जगती पर स्थित है इस समय इस मंदिर का अंतराल और गर्भगृह का खंडित भाग की बचा है मंदिर की प्रमुख विशेषता यह है कि इस मंदिर के गर्भगृह का निर्माण अष्टकोणीय है और मंदिर का निर्माण त्रिरथ शैली में किया गया है। चामुण्डा मंदिर के सामने कुछ दूरी पर उत्तर दिशा की ओर एक प्राचीन बावडी का निर्माण किया गया था जो सूर्य मंदिर समूह के मध्य में निर्मित है अब यह बावडी कूडा करकट से पट चुका है बावडी की उत्तर-दक्षिण और पर्व-पश्चिम की लंबाई बैसठ फीट एवं गहराई लगभग दस फीट है इस बावडी के जल उपयोग पूजा के लिए किया जाता रहा होगा। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार एक समय सामत राजा और टांगीनाथ के बीच भयंकर युद्ध लडा गया जिसमें सामत राजा पराजित होकर वीरगति को प्राप्त हो गये जिसके कारण सामत सरना की रानियो ने इसी बावडी में कूदकर अपनी जान दे दी।

पुरातात्विक स्थल डीपाडीह में स्थित सामत सरना मंदिर समूह से लगभग एक फलांग की दूरी पर उत्तर-पश्चिम दिशा के कोने में सूर्य मंदिर निर्मित है इस टीले पर बोरजा नामक जंगली पेड के उग जाने के कारण स्थानीय निवासी इसे बोरजा टीला भी कहते थे राज्य पुरातत्व विभाग के निर्देशन में इस स्थल की साफ सफाई और मलबा हटाने के बाद एक सूर्य मंदिर का भग्नावशेष सामने आया। हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायो में एक सम्प्रदाय सौर सम्प्रदाय है जो सूर्य की पूजा करता है सूर्य की उपासना का प्रमाण वैदिक काल से मिलता है तथा सूर्य और उसके विविध स्वरूपो की पूजा व उपासना उत्तर वैदिक काल में भी की जाती थी सूर्य मंदिर से प्राप्त प्रतिमा चतुर्भुज है और चारो हाथ खंडित अवस्था में है केवल एक हाथ ऊपरी बांये हाथ में चक्र धारण किये हुये है मूर्ति का सिर का भाग भी खंडित है कान के कुण्डल और लटके हुए दिखायी पड रहे है सूर्य की यह प्रतिमा नौवी शताब्दी की मानी जा रही है। प्राचीन रानी पोखर सामत सरना मंदिर समूह के सामने उरांव टोली जाने वाली कच्ची सडक मार्ग के दांयी ओर कुछ दूरी पर है तालाब का आकार आयताकार है तालाब की लंबाई अधिक और चौडाई कम है तालाब के नीचे उतरने के लिए पत्थर से निर्मित सीढियां बनायी गयी है गांव वाले इस पोखर को रानी पोखर कहते है।

उपसंहार – सरगुजा संभाग छत्तीसगढ के सबसे सीमा में स्थित है जो पडोसी राज्य झारखण्ड और उत्तर प्रदेश से लगा हुआ है सरगुजा का स्थान पुरातत्व की दृष्टि से छत्तीसगढ में महत्वपूर्ण है यहां सीताबेगरा और जोगीमार की गुफाएं है प्राचीन रामायण काल से जुडे हुए गांव जैसे रामगढ, महेशपुर, शंकरगढ, जनकपुर, भरतपुर आदि आज भी विद्यमान है। भागवत धर्म का उदय चौथी सदी में हुआ और इस धर्म को मानने वाले लोग वैष्णव कहलाये इसी तरह भगवान शिव के उपासक शैव धर्म को मानते थे और शिव उनके आराध्य देवता थे। डीपाडीह में निर्मित मंदिर शैव, वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित थे खुदाई से मिले अवशेषो के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि डीपाडीह शैव धर्म का प्रमुख स्थल रख होगा।

भारत में मंदिर निर्माण कला का विकास मौर्यकाल में प्रारंभ हुआ और गुप्त काल में अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में आ गयी थी डीपाडीह में शैव मंदिरो के भग्नावशेष अधिक मिले है जो कि आठवीं से बारहवी सदी के मध्य का है निश्चित रूप से उस समय में डीपाडीह शैव सम्प्रदाय का मुख्य स्थल रहा होगा डीपाडीह के शिव मंदिर एवं सामत सरना मंदिर की तुलना खजुराहो में निर्मित मंदिरो से की जाती है। यह बडे दुख का विषय है कि डीपाडीह स्थित सभी मंदिर लगभग नष्ट हो चुके है जिसके कारण मंदिरो का निर्माण किस शैली में हुआ था इसका अनुमान लगाना संभव नही है। डीपाडीह स्थित मूर्तियो को स्थानीय संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है लेकिन मात्र सुरक्षित रखना ही उद्देश्य न होकर डीपाडीह के प्राचीन इतिहास वैभव और धर्म को पूरे भारत के लोगो तक पहुचाना लक्ष्य होना चाहिए जिसके लिए शासन स्तर से लेकर आम नागरिको को अपने दायित्वो को समझते हुए इतिहास की अमूल्य विरासत को सहेजने और संवारने की आवश्यकता है जिससे भावी पीढी डीपाडीह के इतिहास को जान सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यदु,हेमू, दक्षिण कोसल की कला, दिल्ली, 1978.
2. यदु, हेमू, छत्तीसगढ का पुरातात्विक वैभव, (सरगुजा डीपाडीह क्षेत्र के विशेष संदर्भ में, मौर्यकाल से कलचुरी काल तक), दिल्ली 2003.
3. अवस्थी रामाश्रय, खजुराहो की देव प्रतिमायें, आगरा 1967.
4. सरगुजा जिला गजेटियर, प्रथम संस्करण, 1998,पृष्ठ. 277
5. कनिघम, अलेक्जेंडर,ए.एस.आई.रिपोर्ट 1994, वाल्यूम.13,पृ.66
6. अवस्थी रामाश्रय, खजुराहो की देव प्रतिमायें, आगरा 1967.
7. उपाध्याय वासुदेव, प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्न,पटना 1960.
8. उपाध्याय वासुदेव, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, वाराणसी 1970.
9. ब्राउन, पर्सी, इण्यिन आर्किटेक्चर, बम्बई,19956
10. ठाकुर, वी.एस. राजिम, 1972, पृ.95
11. जैन, वी.सी. द्वारा लिखित स्मारिका
12. वर्मा, के. पी. बस्तर की स्थापत्य कला, 2008, पृष्ठ 98
13. विभागीय बेवसाइट
14. स्थानीय/गाँव के निवासियो द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर

****